सेवा में,

माननीय संपादक/ ब्यूरो चीफ
वाराणसी

दिनांक–02.05.2018

प्रकाशनार्थ

पूरी दुनिया मे आज जिस कल्याणकारी राज्य की बात की जा रही है उस कल्याणकारी राज्य का सपना संत रविदास ने चौदहवीं शताब्दी में ही देख डाला था। संत रविदास ने इसे बहुत पहले बेगमपुरा के नाम से पुकारा और कहा कि–

ऐसा चाहूँ राज मैं जहां मिलै सबन को अन्न। छोट बढ़ो सभ बसै रविदास रहे प्रसन्न ।

उक्त बातें संत रविदास मंदिर सीरगोवर्धनपुर, वाराणसी मे आयोजित '**संत रविदास की बेगमपुरा की अवधारणा**' विषयक संगोष्ठी मे पूरी दुनिया में रविदासिया संप्रदाय के सबसे बड़े धर्म गुरु संत निरंजन दास जी ने कहा। आगे संत निरंजन दास जी ने कहा कि संत रविदास बेगमपुरा की कल्पना मे कहते है कि यदि ऐसा राज्य हो तो हमें (रविदास) प्रसन्नता होगी। संत रविदास स्वयं अपनी प्रसन्नता की बात नहीं कर रहे हैं, उनका मानना तो है कि पददलन, शोषण अत्या्चार, अन्याय, जातिगत भेद, अस्पृश्यता के दंश को झेल रहे मानव की समाज में भागीदारी सुनिश्चित हो तो मैं प्रसन्न हूँ। संत रविदास का चिंतन कितना मजबूत था। तत्कालीन समय में उनकी दृष्टि कितनी पैनी थी। आज का पढ़ा लिखा तबका भी इतनी गहराई से घटनाओं को नहीं समझ सकता। सतगुरू रविदास जी महाराज मानवता का उपदेश देते हैं। यह जीव प्रभु (ईश्वर) का सिमरन कर सब तरह के बंधनों से मुक्त होकर प्रभु के घर बेगमपुरा शहर का वासी बन जाता है। इस तरह समस्तस जनमानस के लिए एकता, समानता, भाईचारा स्थापित करने के लिए विश्व में बेगमपुरा वतन की स्थानपना पर बल दिया है। रविदास की बेगमपुरा में हर जीव रंग भेद, ऊंच–नीच, पराधीनता, बेगार और सभी तरह के सांसारिक बन्धनों से मुक्त होकर एकता का आनंद उठा सकता है।

कार्यक्रम मे पंजाब के सतपाल बिरदी जी ने कहा कि बेगमपुरा वतन में हर प्राणी को सामाजिक समानता, राजनैतिक, सांस्कृातिक, आध्यारत्मिक और मानवीय अधिकार प्राप्त हों। सद्गुरू रविदास महाराज जी ने समस्त मानवता के लिए कल्यारणकारी लोकतांत्रिक समाजवाद की नींव रखी। ऐसी व्यवस्था संसार में होने से सब समस्यायओं का समाधान हो सकता है।

विषय प्रवर्तन करते हुए अध्यक्षीय संबोधन के रूप में डॉक्टर अंबेडकर चेयर ,सामाजिक विज्ञान संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के चेयर प्रोफेसर मनजीत चतुर्वेदी ने कहा कि मानवता के मसीहा डा भीमराव अम्बेडकर जी ने भारत के संविधान की नींव, प्रस्तावना और संविधान की रूप रेखा का सृजन सद्गुरू रविदास महाराज जी के बेगमपुरा शब्द के आधार पर किया। संत रविदास ने सही मायने में बेगमपुरा की कल्पना समाजवाद के आधार पर की। समाजवादी विचारधारा के स्थापत्य का श्रेय बेगमपुरा की कल्पनना के रूप में संत रविदास को ही जाता है।

अंबेडकर चेयर,सामाजिक विज्ञान संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के डॉ विमल कुमार लहरी ने अपने संबोधन में कहा कि आज जिस चौराहे पर पुरी दुनिया खड़ी है, वहाँ संत रविदास के बेगमपुरा राज्य की अवधारणा को स्वीकार करने की आवश्यकता है, तभी हम शायद पुरी दुनिया से जाति–प्रजाति, धार्मिक भेद, अस्पृश्यता, छुआ–छूत, आतंकवाद, अपराध, आदि जैसी समस्याओं से मुक्ति पा सकते हैं।

कार्यक्रम मे कई राज्यो से लोग भाग लिए।

U.P.) जय गुरुदेव

श्री गुरु रविदास

(विमल कुमार लहरी)